P.G (Sanskrit) II Sem

CC - IX, unit - I

मृच्छकटिकम् • मृच्छकटिकम् के आधार पर तात्कालिक सामाजिक स्थितियों का वर्णन

By

Dr. Sanjay Kumar Chaubey

(Assistant professor)

Dept. of Sanskrit

H.D. Jain college, Ara

Scanned by CamScanner

Page :
Date: / /

'मृच्छकटिकम्' के आधार पर तात्कालिक सामाजिक स्थितियों का वर्णन कीजिये :—

संस्कृत साहित्याकाश के अन्तर्गत रूपक रूप ब्रह्माण्ड में जाज्वल्यमान नक्षत्र महाकवि शूद्रक की प्रज्ञाभूत लेखनी से निःसृत 'मृच्छकटिकम्' जगत का सर्वश्रेष्ठ प्रकरण ग्रन्थ है, जिसमें तत्कालीन भारत के मध्यवर्गीय समाज का सम्यक् चित्र जन-सामान्य के दृष्टि के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। कविवर की दीर्घ सामाजिक अनुभूतियों तथा लोक व्यवहार की प्रगाढ़ प्रवीणता का परिचय उनकी रचना के परिशीलन से प्राप्त होता है —

साहित्य समाज का दर्पण :-

इस उक्ति को चरितार्थ करने वाले मृच्छकटिकम् में तत्कालीन मध्यवर्गीय हिन्दू समाज का सच्चा चित्र मिलता है। यद्यपि इस प्रकरण का संसार अधिकतर लम्पटों का ही है, राजनैतिक षड्यन्त्रकारी, विवेकशून्य राजसेवक, अकर्मण्य पुलिस अधिकारी, चोर, बदमाश, जुआरियों, गणिकाओं चेटियों धूर्त द्यूतकर विट जैसों का विचित्र संकुल है। फिर भी इनके माध्यम से प्रायः सम्पूर्ण समाज का यथार्थ चित्र इसमें स्पष्ट हो गया है, जिसे हम निम्न बिन्दुओं में समाहित कर सकते हैं —

(1) **जाति प्रथा :-**

मृच्छकटिक के समय भारतीय समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार भागों में विभक्त था। सम्भवतः चाण्डालों का पञ्चम वर्ग माना जाता था। ब्राह्मण का काम अध्ययन अध्यापन था, वे समाज में पूजनीय माने जाते थे। क्षत्रिय राजा क्रूर अपकर्मी विवेकहीन और दुराचारी होते थे। वैश्य लोग सम्पन्न थे। कायस्थ का स्थान अच्छा नहीं था (कायस्थः सर्पास्पदम्)। शूद्र भी उच्च पदों पर नियुक्त थे, जैसे वीरक और चन्दनक का काम दण्ड प्राप्त व्यक्तियों का वध करना था। किन्तु वे भी सज्जनों का वध करने में हिच-

Page :
Date: / /

निचाते थे। दीर्घायुः। अत्र राजनियोगः खलु अपराध्यति न खलु वयम्।

ब्राह्मणों की अवस्था:—

पौरोहित्य करना और दान दक्षिणा लेना ब्राह्मणों का कर्म था परन्तु कुछ व्यक्ति व्यापारादि कर्म भी करते थे। महत्त्वपूर्ण कार्य में ब्राह्मणों का आगे किया जाता था — "स्वस्तिसिद्धये प्रवृत्तेन ब्राह्मणोऽग्रे कर्तव्यः।" जघन्य अपराध करने पर —

अयं हि पातकी विप्रो न वध्यो मुनिरब्रवीत्।
राष्ट्रादस्मात्तु निर्वास्यो विभवैरक्षतैः सह॥

कुछ ब्राह्मण चोरी आदि दुष्कर्म भी करते थे। शर्विलक इसका प्रमाण है।

आवास व्यवस्था और रहन-सहन:—

एक जाति या पेशे के लोग एक मुहल्ले में रहते थे। चारुदत्त के विषय में कहा गया है — "स खलु श्रेष्ठिचत्वरे प्रतिवसति।" नगरों में राजमार्ग अर्थात् बड़ी-बड़ी सड़कें होती थीं। पहरेदारों की व्यवस्था होने पर भी सड़कों पर खुले आम मार पीट होती थी। माथुर और संवाहक का प्रसङ्ग इसकी पुष्टि करता है। रात्रि में सड़कों पर गणिका विट चेट आदि विचरण करते थे— — "एतस्यां प्रदोषवेलायाम् इह राजमार्गे गणिका विट चेटाः च पुरुषाः सञ्चरन्ति।" आवागमन के लिये बैलगाड़ी घोड़ों और हाथियों का प्रयोग होता था। वसन्तसेना के पास खुण्टमोडक नाम का हाथी था।

दुर्बल राजशक्ति:—

राजशक्ति बहुत ही क्षीण थी। जनरक्षण इतना कुप्रबन्ध था कि रात्रि में सड़कों पर स्त्री क्या पुरुष भी निकलने में घबराते थे — "अस्यां प्रदोषवेलायां तत् मण्डूकलुब्धस्य कालसर्पस्य मूषिका इव अभिमुखपतितो वध्य इदानीं भविष्यामि।" दिनदहाड़े सड़कों पर मारपीट होती थी। नाटक में प्रदर्शित राज्यपरिवर्तन का रहस्य इसी दुर्बल

Page :
Date: / /

राजशक्ति के भीतर हुआ है।

विवाह प्रथाः-

अन्तर्जातीय वैवाहिक प्रथा प्रचलित थी। गणिकायें भी अपना वेश्या छोड़कर कुलवधू बन सकती थीं। चारुदत्त तथा शर्विलक जैसे ब्राह्मणों ने खुलेआम वसन्तसेना एवं मदनिका जैसी गणिकाओं को वधू स्वीकार किया था। इससे बहुविवाह के प्रथा का संकेत मिलता है।

वेश्याओं की स्थितिः-

सम्भवतः वेश्याओं के दो वर्ग थे। गणिका और वेश्या। दशरूपक में कहा गया है— "वेशो वृत्तिः सोऽस्या जीवनम् इति वेश्या, तद्विशेषो गणिका।" गणिकाओं का स्थान ऊँचा था। वे नृत्य गीतादि कर धनर्जन करती थीं। वसन्तसेना इसी वर्ग की थी, उसके पास अतुल वैभव था। वेश्याओं के साथ सम्बन्ध रखना साधारण था किन्तु समाज में प्रतिष्ठित नहीं था। शर्विलक चतुर्थ अंक में कहता है —

इह सर्वस्वफलिनः कुलपुत्रमहाद्रुमाः।
निष्फलत्वमलं यान्ति वेश्याविहगभक्षिताः॥

न्यायालय में पूछे जाने पर चारुदत्त वसन्तसेना के साथ अपना सम्बन्ध बताने में लज्जा का अनुभव करता है। कुछ साहसी लोग वेश्याओं को पत्नी बनाना चाहते थे। चारुदत्त और शर्विलक इसके उदाहरण हैं।

शिक्षाव्यवस्थाः-

शिक्षा का प्रचार- प्रसार विशेष नहीं था। ब्राह्मण पढ़ते- लिखते थे। शर्विलक के पूर्वज चारों वेदों के ज्ञाता तथा अप्रतिग्राही थे। प्राकृतजनों शूद्र को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था —
'वेदार्थान् प्रकृतस्त्वं वदसि न च ते जिह्वा निपतिता'।
स्त्री शिक्षा का प्रचलन सम्भवतः नहीं था। शकुन अपशकुन भी माने जाते थे।

Scanned by CamScanner

Page :
Date: / /

पर्दाप्रथा :-

पर्दा प्रथा प्रचलित नहीं थी। इसलिये दशम अंक में धूता सबके सामने आती है। वसन्तसेना वधू बनाई गई मदनिका भी पर्दा नहीं करती थी। उसे वधू शब्द का ही अवगुण्ठन दिया गया है –

'यत्र ते दुर्लभं प्राप्तं वधू शब्दावगुण्ठनम्।'

सती-प्रथा :-

सती प्रथा के प्रचलन का संकेत मिलता है। क्योंकि दशम अंक में धूता चारुदत्त के मृत्युदण्ड पर आत्मदाह का प्रयास करती है।

दासप्रथा और बन्धकप्रथा :-

मनुष्य खरीदे व बेचे जाते थे। द्वितीय अंक में हारा संवाहक अपने को बेच कर ~~ऋ~~ दासमुक्त होना चाहता है —

'आर्याः क्रीणीध्वं माम्। अस्य सभिकस्य हस्ताद् दशभिः सुवर्णैः।' वसन्तसेना की दासी मदनिका को छुड़ाने के लिये शर्विलक चोरी करके धन लाता है। कभी-कभी राजाज्ञा से भी दोषमुक्त (दास) हो जाते थे।

द्यूतप्रथा :-

द्यूतक्रीडा का बहुत प्रचार था। यह वैध था। रुपये पैसों का हिसाब रखने वाला लेखक तथा टोली का मुखिया सभिक कहलाता था। हार कर रुपये न देने वाले का दावा न्यायालय में किया जा सकता था। द्वितीय अंक में संवाहक के विषय में द्यूतकर कहता है —
'राजकुले गत्वा निवेदयावः।' कुछ लोग द्यूतक्रीडा से ही रोटी कमाते थे।

मद्यपान प्रथा :-

कुछ लोग मदिरालयों में जाकर मदिरा-पान करते थे। अष्टम अंक में शकार भिक्षु से कहता है – 'अपानके मद्यप्रविष्टस्येव शीर्षं ते भङ्क्ष्यामि।'
मदिरा के विभिन्न रूप प्रचलित थे।

ललित कलाओं की उन्नत अवस्था :-

संगीतकला,

Scanned by CamScanner

चित्रकला, स्थापत्यकला तथा मूर्तिनिर्माण कला प्रचलित थी। संगीतप्रेमी चारुदत्त रेभिल के घर संगीत सुनने जाता था। तथा वह वीणावादन की प्रशंसा भी करता है — 'वीणा हि नाम असमुद्रोत्थितरत्नम्।' चित्रकला का अच्छा प्रचार था। वसन्तसेना चारुदत्त का चित्र बनाती है। संवाहक संवाहन कला का पण्डित है। द्वितीय अंक में काष्ठमयी और शैलमयी प्रतिमाओं का उल्लेख है। वसन्तसेना के महल के वर्णन में अनेक कलाओं का नाम आता है। यहाँ तक कि चौर्य भी एक कला मानी जाती थी। शर्विलक शिक्षित चोर था। इस कला के आचार्यों के नाम तृतीय अंक में प्राप्त होते हैं।

बौद्धविहारों की स्थिति :-

बौद्ध धर्म सम्पन्न दशा में था। परन्तु इसके अनुयायियों में भी निकम्मे लोग भर गये थे। 'सन्यासकुलदूषणैरिव जनैः' का लक्ष्य ऐसे लोगों की ओर ही था। विहारों में भिक्षुणियाँ भी रहती थीं। — 'स्वस्मिन् विहारे मम धर्मभगिनी तिष्ठति।' से किसी भिक्षुणी का संकेत मिलता है। इसी तरह चारुदत्त की यह कल्पना — "तत्पृथिव्यां सर्वविहारेषु कुलपतिः क्रियताम्।' बौद्धविहारों की बहुलता का प्रभावक है।

स्त्रियों की शृङ्गारप्रियता :-

स्त्रियाँ स्वभाव से शृङ्गारप्रिय होती थीं। नूपुर, हस्ताभरण, करधनी आदि आभूषण पहनती थीं।

निष्कर्ष :-

तथ्य यह है कि वह युग समृद्धि का युग था और उसके साथ आनेवाली सभी बुराइयों के लिये वहाँ पूरा द्वार खुला था। ऐसे भ्रष्ट वातावरण के भीतर से चारुदत्त जैसे आदर्श तथा सच्चरित्र पात्र की कल्पना सचमुच कवि की विमल प्रतिभा का निदर्शन है।